PATNA WOMEN'S COLLEGE AUTONOMOUS 1940

Hindi

Explore–Journal of Research
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
UGC Approved List of Journals No. - 64404
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

महादेवी वर्मा के संस्मरणात्मक रेखाचित्रों में दलित संवेदना

Received : January 2019
Accepted : March 2019

Abstract (सारांश) : हिन्दी साहित्य में दलित- साहित्य की सुदीर्घ परंपरा है। मानव को केन्द्रबिन्दु बनाकर बहिष्कृत समाज की वेदना को वाणी प्रदान करने वाले इस साहित्य की मुख्य विधा प्रारंभ में आत्मकथा थी, जो अनुभूत यथार्थ पर आधारित होती है। कालांतर में साहित्य की अन्य विधाओं सहित रेखाचित्र और संस्मरण में भी दलित-वेदना को अभिव्यक्ति मिली। यथार्थ पर आधारित इन विधाओं में कल्पना की जगह सत्य की समग्रता तथा लेखक की अनुभूतियों, स्मृतियों और जीवन-मूल्यों का अद्‌भुत संगम होता है।

महादेवी वर्मा हिन्दी की सर्वोत्तम संस्मरण लेखिका और रेखाचित्रकार हैं। इनके ग्यारह संस्मरणात्मक रेखाचित्रों का संग्रह 'अतीत के चलचित्र' 1941 में प्रकाशित हुआ, जिनमें आठ रेखाचित्र दलित वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। 1943 में प्रकाशित, द्विवेदी-पदक से सम्मानित 'स्मृति की रेखाएँ' के सात रेखाचित्रों में पाँच दलित वर्ग को समर्पित हैं। अन्य रेखाचित्र भी किसी न किसी रूप में समाज से बहिष्कृत और उपेक्षित चरित्रों के ही प्रतिरूप हैं।

इन संस्मरणात्मक रेखाचित्रों के सभी पात्र दीन, विवश परंतु कर्मठ और रचनाशील हैं। पुरूष-पात्रों में दृढ़ता, उत्साहपूर्ण शक्ति तथा आत्म-गौरव है, तो स्त्री-पात्रों में गरिमामयी बनानेवाली भावनात्मक दुर्बलता। अपने जीवन से जुड़े इन चरित्रों के व्यक्तित्व के सकारात्मक पक्षों पर विशेष बल देते हुए महादेवी जी ने अनेक सामाजिक विकृतियों की चर्चा की और इन्हें हर संभव मदद देकर समाज-सुधार की दिशा में सार्थक पहल भी की।

वास्तविक जीवन पर आधारित होने के कारण ये रेखाचित्र जीवन के अनेक रंग तो प्रस्तुत करते ही हैं, महादेवी जी की गहरी संवेदना के प्रतीक भी हैं। इनमें यदि जीवन का स्पंदन और आत्मा का वृहत्कंपन है तो अछूतोद्धार का संदेश भी है। दलित-संवेदना पर आधारित ये रचनाएँ सत्यम्, शिवम् और सुंदरम् की प्रतिष्ठा करने के साथ-साथ नव-जागरण का शंखनाद भी करती हैं।

दीपा श्रीवास्तव
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : deepsri24@gmail.com

उद्देश्य :- इस शोध पत्र का उद्देश्य महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित दलितों और उपेक्षितों की दारूण दशा का विश्लेषण करना है।

Key Words (संकेत शब्द): दलित-साहित्य, दलित-संवेदना, सामाजिक विकृतियाँ, सकारात्मक पक्ष, अछूतोद्धार ।

भूमिका:

हिन्दी-साहित्य में दलित-साहित्य की सुदीर्घ परंपरा है। इसका केन्द्र-बिन्दु मानव होता है और बहिष्कृत समाज की वेदना को वाणी देना इस साहित्य का मुख्य उद्देश्य है। प्रारंभ में दलित-साहित्य की मुख्य विधा आत्मकथा थी, जो भोगे हुए यथार्थ पर आधारित होती है। कालांतर में आलोचनात्मक ग्रंथों, शोधग्रंथों और समीक्षात्मक ग्रंथों में भी दलित-साहित्य की रचना हुई ।

संस्मरण और रेखाचित्र साहित्य की अपेक्षाकृत नई विधाएँ हैं। इनकी बुनियाद भी यथार्थ पर आधारित होती है और कल्पना की जगह सत्य की समग्रता मिलती है। इनमें लेखक की अनुभूतियों, स्मृतियों और जीवन-मूल्यों का अनोखा संगम होता है।

महादेवी जी हिन्दी की सर्वोत्तम संस्मरण लेखिका और रेखाचित्रकार हैं। इनके संस्मरणों में गद्य का शुद्ध रूप, जीवन का स्पंदन और आत्मा का वृहत्कंपन देखा जा सकता है। कुशल चित्रकार होने के कारण वे अच्छे रेखाचित्र लिखने में भी निपुण हैं। वैसे भी रेखाचित्र लिखने की कला चित्रकला से ही प्रेरित है।

यद्यपि महादेवी जी की रचनाओं को 'संस्मरण' या 'रेखाचित्र' समझने में परस्पर विरोध है तथापि इन्हें संस्मरणात्मक